गांव जगाने हेतु पैदल भारत परिक्रमा

नौ अगस्त 1942 को देशभक्तों ने अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए ललकारा था और सिर्फ पांच साल बाद ही अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा। आजादी के 65 साल बाद आज नौ अगस्त के ही दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्री सीताराम केदिलाय ने भूख, भय और भ्रष्टाचार को भारत से बाहर खदेड़ने तथा गांव को गांव से जोड़ते हुए सम्पूर्ण देश व विश्व को जोड़ने के संकल्प के साथ देश की पैदल परिक्रमा का शुभारम्भ किया।

करीब 15000 किमी की दूरी तय कर यह यात्रा पांच साल बाद कन्याकुमारी के उसी ग्राम में सम्पन्न होगी, जहां से आज यह शुरू हुई। यात्रा का शुभारम्भ 9 अगस्त को प्रात: 7 बजे कन्याकुमारी स्थित वल्लिमलै आश्रम के संत पूज्य स्वामी चैतन्यानन्द महाराज के आशिर्वाद से हुआ। स्वामी चैतन्यानन्द महाराज सामाजिक समरसता तथा बाल विकास के लिए अनुकरणीय कार्य कर रहे हैं। औपचारिक शुभारम्भ से पूर्व शंखनाद तथा ध्वजारोहण (सूर्य ध्वज) हुआ। इससे पूर्व 7 अगस्त को श्री सीतारामजी ने कन्याकुमारी स्थित विवेकानन्द स्मारक की परिक्रमा और 8 अगस्त को कन्याकुमारी मंदिर के दर्शन कर मंदिर की परिक्रमा की। उसी दिन यात्रा के निर्विघ्न सम्पन्न होने की कामना के साथ गणपति हवन सम्पन्न हुआ, जिसे बंगलौर स्थित वेद विज्ञान गुरूकुलम से आए आचार्यों के एक समूह ने सम्पन्न कराया। सांयकाल फिर से कन्याकुमारी देवी की पूजा की गयी। 8 अगस्त को ही श्री सीताराम का जन्मदिन भी था।

यात्रा के बारे में जानकारी देते हुए श्री सीताराम केदिलाय ने बताया कि प्रतिदिन लगभग 10 किमी की पैदल यात्रा कर किसी न किसी गांव में विश्राम किया जाएगा। गांव में पहुंचकर गांव के युवकों तथा प्रमुख लोगों से सम्पर्क करना सबसे पहला काम होगा। इसके बाद गांव के लाचार, अपाहिज, बीमार, दृष्टिहीन आदि जरूरतमंद लोगों की सेवा की जाएगी। सांयकाल ग्रामवासियों को साथ लेकर गांव की परिक्रमा व गांव के मंदिर में सामूहिक आरती की जाएगी। इसके पश्चात् लोगों से सीधा सम्वाद स्थापित करते हुए उन्हें याद कराया जाएगा कि एक समय हमारे गांव एक परिवार जैसे थे। अब वह भाव समाप्त होने के कारण ही न केवल गांव में बल्कि सम्पूर्ण देश तथा विश्व में अनेक समस्याएं पैदा हुई हैं। यदि ग्राम स्तर पर वही परिवारभाव फिर से जाग्रत हो जाए तो यह भाव सम्पूर्ण भारत को जोड़ते हुए सम्पूर्ण विश्व में 'वसुधैव कुटुम्बकम' की कल्पना को फिर से साकार कर सकता है। इसके बाद अगले गांव के लिए प्रस्थान होगा।

श्री सीतारामजी बहुत वर्षो से सिर्फ एक समय ही भोजन करते हैं। इस यात्रा के दौरान भी वे अपने साथ कुछ नहीं लेकर चल रहे हैं। भिक्षा में जो कुछ प्राप्त होगा, उसी से एक समय का भोजन करेंगे। कन्याकुमारी स्थित देश के आखिरी छोर से यात्रा शुरू करते समय श्री सीतारामजी के साथ तीन बहनें--दो कर्नाटक की और एक तमिलनाडु की--भी हैं। वे कुछ ही दिन उनके साथ चलने वाली हैं। उसके बाद नये लोगों के समूह उनके साथ जुड़ने की संभावना है।

यह पूछे जाने पर कि इस आयू में अकेले भारत परिक्रमा का विचार मन में कैसे आया, श्री केदिलाय ने कहा, ''पहली बात तो यह है कि मैं अकेला नहीं हूं। देश के सभी 121 करोड़ लोग और उनकी भावनाएं मेरे साथ हैं। आखिर यह संकल्प सम्पूर्ण देश के लिए ही ता है।''

नौ अगस्त को यात्रा शुरू करने के पीछे एक और कारण है। नौ अगस्त को देश के कुछ हिस्सों में जन्माष्टमी का उत्सव मनाया गया। वर्ष 2009 में विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा जैसे गाय व ग्राम रक्षा के विशाल देशव्यापी जनजागरण अभियान का सफल संचालन कर चुके श्री सीताराम कहते हैं, ''जन्म लेते ही श्रीकृष्ण गांव चले गये थे और वहीं रहकर उन्होंने गाय, ग्राम तथा किसान रक्षा का अभूतपूर्व काम किया। आज फिर से हमें गाय, ग्राम तथा किसानों की रक्षा करनी है।'' पदयात्रा के लिए श्री सीतारामजी ने एक नारा दिया है--''भारत जानो, भारत बनो, भारत बनाओ विश्वगुरू।''

यात्रा के उददेश्य को स्पष्ट करते हुए श्री सीताराम कहते हैं कि आज दुनिया में प्रमुख रूप से तीन विचार हावी हैं। पहला है 'विश्व एक बाजार है और जीवन एक व्यापार है'। वास्तव में इसी मानसिकता ने पूरी दुनिया में हर चीज खरीदने-बेचने की होड़ पैदा कर दी है और इसी कारण गरीबी, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार का तांडव सब तरफ दिखायी देता है। दूसरा विचार है 'विश्व एक युद्ध का मैदान है और जीवन एक संघर्ष है'। इस मानसिकता के कारण आज चारों तरफ हिंसा, आतंकवाद तथा हाथों में हथियार दिखायी देते हैं। इसी से अशान्ति पैदा हो रही है। इसीलिए पूरी दुनिया शान्ति की तलाश में भटक रही है। दुनिया को यदि शान्ति चाहिए तो वह सिर्फ भारत ही प्रदान कर सकता है। यही कारण है कि दुनिया में जो तीसरा विचार जोर पकड़ रहा है वह है 'विश्व एक परिवार है और जीवन एक दर्शन है'। यह विचार भारत ने पूरी दुनिया को दिया है। इसमें हिंसा नहीं बल्कि प्यार, आत्मीयता और स्नेह से जीने का संदेश है। वास्तव में इसी से पूरी दुनिया में शान्ति स्थापित होगी। इस विचार को साकार करने का प्रयास गांव से शुरू होना चाहिए। इसीलिए इस यात्रा का आयोजन किया गया है ताकि ग्राम, भारत तथा पूरी दुनिया को बचाया जा सके।